शिक्षा का उत्थान

## मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

अंक-५० वर्ष-२०२५

माह मई

शिक्षक का सम्मान

# शिक्षण संवाद

मिशन

शिक्षण

संवाद

# शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

वर्ष-२०२५
अंक-५०

माह- मई २०२५

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

आनन्द मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक

सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी,

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी

जितेन्द्र कुमार, अनिल मौर्य, विकास शर्मा

विशेष सहयोगी

विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

## आओ हाथ से हाथ मिलाएं
## बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
**9458278429**

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

# शुभकामना सन्देश

मिशन शिक्षण संवाद संस्था के मासिक साहित्य संकलन ‘शिक्षण संवाद’ के स्वर्ण जयंती (50वें) अंक – मई 2025 के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई एवं अशेष शुभकामनाएँ।

यह गौरवपूर्ण उपलब्धि न केवल संस्था की निरंतर साधना, साहित्यिक प्रतिबद्धता एवं शैक्षिक चेतना का प्रतीक है, बल्कि यह समाज में जागरूकता, विचारशीलता एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सशक्त कदम भी है। मिशन शिक्षण संवाद संस्था का आदर्श वाक्य – "शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण" इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में सार्थक रूप में अभिव्यक्त होता रहा है। यह अंक भी निश्चित रूप से ज्ञान, मूल्य और विचारों की दृष्टि से समृद्ध होगा तथा पाठकों को चिंतन, प्रेरणा और नवदृष्टि प्रदान करेगा।

इस स्वर्णिम पड़ाव पर संस्था के सभी पदाधिकारियों, संपादकीय दल, रचनाकारों तथा पाठकों को कोटिशः शुभकामनाएँ।

कामना है कि शिक्षा, संवाद एवं सृजन की यह पुण्ययात्रा यशस्वी, प्रेरक एवं निरंतर प्रगतिशील बनी रहे।

मंजू सैनी
प्रवक्ता (गणित)
चौधरी चरण सिंह जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बड़ौत
जनपद– बागपत

# सम्पादकीय

प्रकृति की सृष्टि में समानता, विविधता, विरोधाभास आदि सभी गुण अवगुण पूर्व से ही विद्यमान हैं। यही कारण है कि हम मनुष्यों के बीच भी यह सभी गुण देखने को मिलते हैं। प्रकृति के यह सभी गुण प्रकृति को संतुलित कर, उसे व्यवस्थित कर सतत संचालित करने में सहायक भी हैं। अन्यथा यह सभी गुण प्रकृति में बहुत लम्बे समय तक विद्यमान नहीं रह सकते थे। क्योंकि प्रकृति का नियम है कि ''अनुपयोगी को नष्ट कर अपने में समाहित कर लेना।''। जैसे ही किसी प्राकृतिक वस्तु की उपयोगिता खत्म होती है। प्रकृति उसे नष्ट करके अपने में समाहित कर लेती है। जैसे पेड़—पौधे और जीव—जन्तु आदि एक समय सीमा के बाद, जैसे ही उनका जीवन शिथिल एवं अनुपयोगी हो जाता है। प्रकृति उनको अपने में विलीन कर लेती है।

लेकिन प्रकृति की विविधता और विरोधाभास ही उसके अनन्त काल की साक्षी भी है। तो फिर हम मनुष्यों के लिए यही हमारी विविधता और विरोधाभास जैसे गुणों से, क्या मानव जीवन को संतुलित बनाये रखने में तथा व्यवस्थित बनाये रखने में उपयोगी नहीं बनाया जा सकता है? क्या हमें प्रकृति के प्राकृतिक नियमों से सीखकर अपने जीवन को विविधता और विरोधाभास के बीच उपयोगी बनाने के प्रयास नहीं करते रहना चाहिए? क्या हम ऐसा नहीं कर सकते हैं कि यही सब विविधता और विरोधाभास हमारे जीवन को सशक्त और मज़बूत बनाकर अनन्त सुखद प्रेम और आनन्द का कारण बन सकें?

ऐसे ही अनेकों प्रश्नों के समाधान एवं चिंतन के लिए जुड़े रहिए ''शिक्षा के उत्थान, शिक्षक के सम्मान और मानवता के कल्याण'' के लिए समर्पित मिशन शिक्षण संवाद से एवं पढ़ते रहिए मासिक विचारों एवं कार्यों के संकलन ''शिक्षण संवाद'' को।

सादर धन्यवाद,

आपका

विमल कुमार

Index

# अनुक्रमणिका

| विषय वस्तु | पृष्ठ सं० |
|---|---|
| विचारशक्ति–शिक्षा का महत्व | 7 |
| विचारशक्ति–नैतिक शिक्षा | 8 |
| शिक्षक उपलब्धि | 9 |
| मिशन गीत | 10 |
| टी.एल.एम.संसार–मैजिक बोर्ड | 11-12 |
| बात महिला शिक्षकों की–कठिनाईयाँ एवं संघर्ष | 13 |
| बात महिला शिक्षकों की–चुनौतियाँ | 14 |
| सदविचार–रविन्द्र नाथ टैगोर | 15-16 |
| प्रेरक–प्रसंग–महाराणा प्रताप | 17-18 |
| योग विशेष–योगा करो | 19 |
| बाल कविता–तितली | 20 |
| लेख–पर्यावरण एवं जल संरक्षण | 21-23 |
| शिक्षण तकनीक–हाइब्रिड लर्निंग | 24 |
| शैक्षिक गतिविधि–गोले में चर्चा | 25 |
| नवाचार–पेपर मेसी | 26 |
| बच्चों का कोना–बिन पानी खत्म कहानी | 27-28 |
| खेल जगत–शिक्षा में खेलों का महत्व | 29-30 |
| बाल फ़िल्म–आई एम कलाम | 31-32 |

# शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा मनुष्य के जीवन की नींव होती है । यह न केवल ज्ञान प्रदान करती है। बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व सोचने की क्षमता ,सामाजिक व्यवहार को विकसित करती है । शिक्षित व्यक्ति समाज के लिए प्रेरणा का कार्य करता है। शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तक ज्ञान नहीं है। बल्कि जीवन जीने की कला है। शिक्षा सही गलत का भेद, नैतिक मूल्य, तर्कशील, वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

भारतीय समाज में शिक्षा से लाभ :–

- आत्मविश्वास बढ़ाना ।
- आत्मनिर्भर बनाना ।
- रोजगार के अवसर प्रदान करना।
- अंधविश्वास रूढ़िवाद को खत्म करना।
- लिंग भेद,लड़का लड़की को समाज में समान अवसर देना
- जेंडर स्टीरियोटाइप खत्म करना।
- सामाजिक विकास में सहायक।

## शिक्षा के प्रकार

औपचारिक शिक्षा – यह शिक्षा विद्यालय और कॉलेज से प्राप्त होती है।

अनौपचारिक शिक्षा – यह शिक्षा परिवार और समाज से प्राप्त होती है।

तकनीकी शिक्षा – किसी विशेष क्षेत्र में व्यावसायिक और तकनीकी ज्ञान प्राप्त करना तकनीकी शिक्षा कहलाता है।

## निष्कर्ष

शिक्षा जीवन को सही दिशा देने का माध्यम है। हमें स्वयं और दूसरों को शिक्षित करते रहना चाहिए। जिससे हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र का विकास हो सके। तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

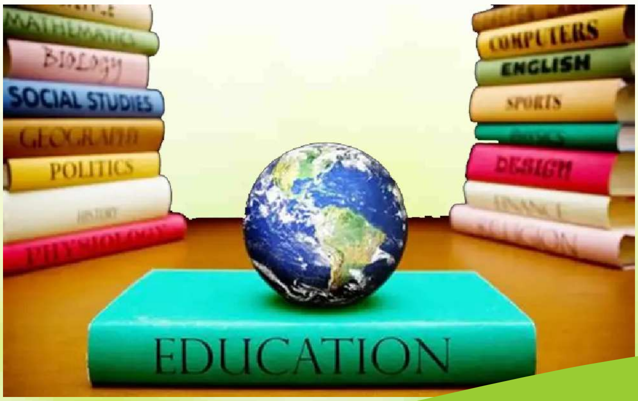


किरन कुमारी (सहायक अध्यापक)
उच्च प्राथमिक विद्यालय निवाली कंपोजिट बागपत
जनपद–बागपत, मोबाइल–996855929

# नैतिक शिक्षा

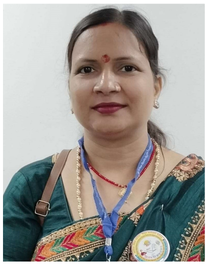



प्यारे बच्चों!

शिक्षा से हमारी अंतर्निहित शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा हमें श्रेष्ठ जीवन जीने योग्य बनाती है। प्रायः वर्तमान परिपेक्ष में देखा जा रहा है कि लोगों में सद्गुणों की कमी होती जा रही है। सभी अपने निजी स्वार्थ में लगे हुए हैं, जो एक सभ्य सुसंस्कृत समाज के निर्माण में बाधक है। नैतिक शिक्षा बच्चों में नैतिक गुणों को जागृत करती है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नैतिक शिक्षा के अभाव में एक श्रेष्ठ राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। बच्चा जब जन्म लेता है, तो उसे कुछ भी ज्ञात नहीं होता। उसे भले बुरे की कोई भी समझ नहीं होती। धीरे–धीरे वह अपनी माँ, परिवार और अभिभावकों से बहुत कुछ सीखता है। उसके पश्चात वह विद्यालय में आकर सीखता है। सीखने का यह क्रम जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

बाल मन कच्ची मिट्टी की तरह होता है। उसे जिस भी आकर में ढाला जाता है, वह उसी आकार का रूप ले लेता है। यदि बचपन से ही बच्चों काके नैतिक शिक्षा दी जाये, तो उनमें मानवीय गुणों का विकास होता है। सरल शब्दों में कहें– यदि बचपन से ही बाल मन में नैतिकता के बीच बोए जाते हैं, तो वह एक विशाल वृक्ष का रुप ले लेता है। व्यक्ति के अंदर दया, करुणा, प्रेम जैसे मानवीय और नैतिक गुण जागृत होते हैं। जिससे उसे भले बुरे की अच्छी समझ होती है। साथ ही साथ वह एक दूसरे के दु:ख सुख में भी भागीदारी बनते हैं। नैतिक शिक्षा संस्कृति और मूल्यों की रक्षा करती है।

इसलिए हम सभी का दायित्व है, कि बचपन से ही बाल मन को नैतिक शिक्षा से सजाएँ। यानी कि बच्चों में नैतिक गुण जागृत करें। जिससे हमारा परिवार, समाज राष्ट्र निरंतर उन्नति करे और नये कीर्तिमान रचे।

धन्यवाद,

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम
ब्लॉक अमरौधा जनपद कानपुर देहात

## सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन वीडियो पुरस्कार से पुरूस्कृत शिक्षक

# प्रांजल सक्सेना

**CIET & NCERT** प्रतिवर्ष अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई–कंटेंट प्रतियोगिता कराती है। इस **AICE eCC** प्रतियोगिता 2024–25 में प्रांजल सक्सेना, सहायक अध्यापक, उच्च प्राथमिक विद्यालय रहटुइया, विकास खण्ड–मझगवाँ, जनपद– बरेली को सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन वीडियो बनाने के लिए पुरस्कृत किया गया। 28 मार्च 2025 को उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, उमियाम, शिलांग, मेघालय में आयोजित कार्यक्रम में **NCERT** के जॉइंट डायरेक्टर श्री अमरेन्द्र बेहरा जी द्वारा ट्रॉफी व प्रमाण–पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया गया व 5000/– रूपये की नकद राशि भी पुरस्कार स्वरूप उन्हें उनके खाते में प्राप्त हुई।

प्रांजल सक्सेना मिशन शिक्षण संवाद परिवार के एक ऐसे साहित्यिक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने न केवल "शिक्षण संवाद" के समस्त अंकों के प्रबंध सम्पादक के रूप में सफ़ल संपादन किया है, बल्कि विभिन्न विषयों पर उनकी ढेर सारी पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार को उनकी इस उपलब्धि पर गर्व की अनुभूति हो रही है। हम उन्हें उनकी इस उपलब्धि पर दिल से बधाई प्रेषित करते हैं। साथ ही आशा करते हैं कि वे बेसिक शिक्षा परिषद एवं मिशन शिक्षण संवाद परिवार का इसी प्रकार मान बढ़ाते रहेंगे।

# मिशन गीत

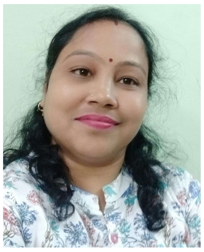



मिशन शिक्षण संवाद, है ये ज्ञान का पिटारा,
ऐसा ज्ञान का पिटारा।
बच्चों की राहों को इसने ज्ञान से संवारा।।
ऐसा ज्ञान का पिटारा........

सभी शिक्षकों का ये साथी, करे सरल ये काम,
ज्ञान का पुष्प खिलाया, जग का किया उत्थान।
अज्ञान का हरण किया, चमकाया ज्ञान का तारा।।
मिशन शिक्षण संवाद, है ये ज्ञान का पिटारा,

हो कोई प्रतियोगिता या कोई एग्जाम,
विधियाँ इसकी ऐसी, हर मुश्किल हो आसान।
शिक्षा जगत में ऐसे चमके, जैसे कि ध्रुवतारा।।
मिशन शिक्षण संवाद है, ये ज्ञान का पिटारा,

जबसे जुड़े सब इससे, सपने हुए साकार,
उचित राह दिखाई, बच्चों का किया उद्धार।
विमल त्याग की टीम ने बदली, सबकी जीवनधारा।।
मिशन शिक्षण संवाद, ऐसा ज्ञान का पिटारा,
ऐसा ज्ञान का पिटारा........

डॉ० शालिनी गुप्ता (स०अ०)
कपोजिट यूपीएस मुर्धवा
म्योरपुर, सोनभद्र

# मैजिक बोर्ड

शिक्षण संवाद

इस टीएलएम (शिक्षण सहायक सामग्री) के माध्यम से बच्चों को गणित की मूलभूत अवधारणाओं को सीखने में मदद मिलेगी। आइए इसे विस्तार से देखें–

सामग्री– गत्ता, चार्ट पेपर, स्केल, मार्कर, कटर, फेवीकोल, अन्य आवश्यक सामग्री

लर्निंग आउटकम–

1. गिनती– 1 से 100 तक की संख्याओं की गिनती सीखना।
2. सम और विषम संख्याएं– सम और विषम संख्याओं की पहचान करना और उनके बीच का अंतर समझना।
3. आरोही और अवरोही क्रम– संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करना।
4. अनुवर्ती और पूर्ववर्ती– किसी संख्या के अनुवर्ती और पूर्ववर्ती की पहचान करना।
5. अभाज्य संख्याएं– अभाज्य संख्याओं की पहचान करना और उनके गुणों को समझना।
6. गुणज 3 के गुणज व 4 के गुणज फिर साथ में 12 के गुणज व गुणज की वास्तविकता को समझेंगे।
7. जादुई आंकड़े– संख्याओं के साथ जादुई पैटर्न बनाना, जैसे कि तीन–चार कटिंग आयत को मैजिक बोर्ड पर कहीं भी रखने पर तिरछे में जोड़ समान आना।

लाभ–

– बच्चों को गणित की मूलभूत अवधारणाओं को सीखने में मदद मिलेगी।
– बच्चों की समस्या–समाधान क्षमता और तर्कशक्ति में सुधार होगा।
– बच्चों को गणित के साथ जादू और मनोरंजन का अनुभव मिलेगा।

कार्यान्वयन–

1. सबसे पहले, गत्ता और चार्ट पेपर का उपयोग करके मैजिक बोर्ड बनाएंगे।
2. मार्कर और स्केल का उपयोग करके संख्याओं और पैटर्न को बनाएंगे।
3. कटर और फेवीकोल का उपयोग करके कटिंग आयत और अन्य आकार बनाएंगे।
4. बच्चों को संख्याओं और पैटर्न के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
5. बच्चों को जादुई आंकड़े बनाने और उनके गुणों को समझने के लिए प्रोत्साहित करेंगें।

उम्मीद है, यह टीएलएम बच्चों को गणित की मूलभूत अवधारणाओं को सीखने में मदद करेगा और उन्हें गणित के साथ जादू और मनोरंजन का अनुभव मिलेगा।

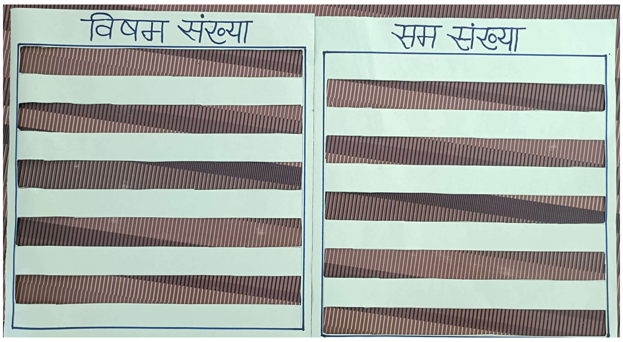

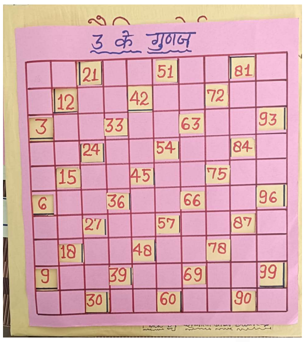

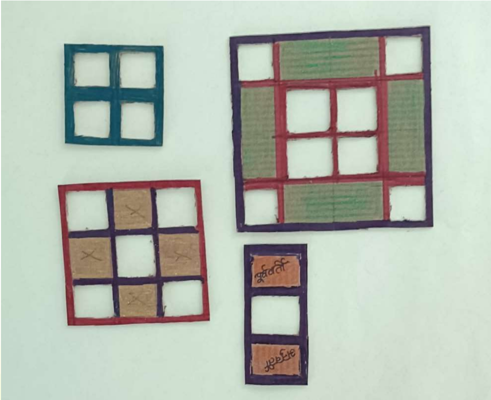

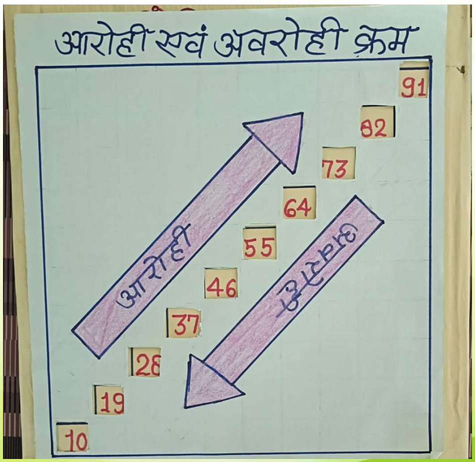


शंखधर द्विवेदी, सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8) करपिया
विकासखण्ड – कोरांव
जनपद – प्रयागराज

# कठिनाइयाँ व संघर्ष

किसी ने सच ही कहा है कि टीचर बनने के लिए बड़ी हिम्मत चाहिए। मेरा नाम अफ़रोज़ जहाँ है। मैं कम्पोजिट विद्यालय में सहायक अध्यापक के पद पर तैनात हूँ। महिला शिक्षक होने के नाते मैं भलीभाँति जानती हूँ, कि घर और नौकरी को एक साथ व्यवस्थित करने में महिलाओं को अधिकांश समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मैं अपनी बात करूँ! तो मैं और मेरे पति दोनों एक ही ब्लॉक में कार्यरत हैं। ये हमारी खुशनसीबी है। विद्यालय की दूरी 30 किलोमीटर है। विद्यालय एक साथ जाना होता है। किंतु पाँच किलोमीटर रह जाने पर हम दोनों के रास्ते अलग हो जाते हैं। हम दोनों को अलग अलग जाना पड़ता है। कभी साधन से तो कभी शिक्षक साथी मिल जाने पर मेरा विद्यालय जाना होता है। मेरे दो बच्चे हैं। बेटा नौ साल व बेटी सात साल की है। मैं सुबह 4 बजे उठती हूँ। योगा करती हूँ। नमाज पढ़ती हूँ। घर के छोटे मोटे काम जैसे झाड़ू लगाना, पानी भरना, पेड़ों को पानी देना आदि करने के पश्चात किचन में नाश्ता खाना बनाने में लग जाते हैं। किचन से बीच बीच में भाग कर बच्चों को जगाना पड़ता है। कभी कभी तो ऐसा लगता है, मानो जैसे हम पी.टी. उषा बन गए हैं। घड़ी की सुई पर हर पल हमारी नजरें रहती हैं। मेरी बेटी जल्दी नहीं उठती है। उसको दोबारा से जगाना पड़ता है। कभी लाड दुलार करना पड़ता है। तब जाकर उठती है। कभी कभी कहती है मम्मा आज स्कूल मत जाओ। पर क्या करें नौकरी भी करनी है। बच्चों को भी सम्हालना है। बच्चों को और पति को नाश्ता कराने के बाद स्कूल के लिए तैयार करना, बच्चों का टिफ़िन पैक करना। फिर चाय का कप लेकर खुद भी विद्यालय के लिए तैयार होना। पीछे से पतिदेव की आवाज़ जल्दी करो! देर हो रही है। जल्दी–जल्दी तैयार होकर बच्चों को नानी के घर छोड़ कर हम विद्यालय जाते हैं। बच्चों की स्कूल बस देर से आती है। स्कूल में शिक्षण कार्य के पश्चात् बच्चों को नानी के घर से लेकर घर आते हैं। बच्चों की शिकायतें सुनना, खाना खिलाना, स्कूल का होमवर्क कराना, ट्यूशन का वर्क भी हम महिलाओं को ही कराना पड़ता है। वापस आकर बचे हुए घर के काम करना। रात के खाने की व्यवस्था करना। वक्त का पता ही नहीं चलता कि कब सुबह से रात हो गई। मुझे लगता है कि शायद सभी महिला शिक्षकों को इन्हीं सब कामों से गुज़रना पड़ता होगा।

अफरोज जहाँ
स०अ०
कम्पोजिट विद्यालय टेढ़ा
विकासखण्ड– सुमेरपुर
जनपद– हमीरपुर

# चुनौतियाँ

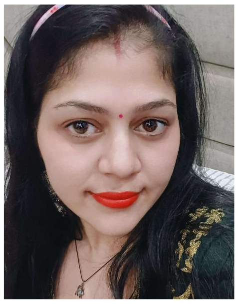



चुनौतियाँ हर क्षेत्र में होती हैं। फिर चाहे वह कार्यक्षेत्र घर के अन्दर हो या घर के बाहर। एक समय था जब शिक्षण जॉब को हमारा समाज बहुत ही सम्मानित व सुरक्षित मानता था। परन्तु अब कभी कभी सुनने में आता है कि डिग्री मिल जाने के बाद महिला शिक्षक बन गयी तो करना ही क्या है। स्कूल जाओ पाँच से छः घण्टे में कुछ देर बच्चों को पढ़ाओ और फिर उन्हें लिखने को दे दो बस काम खत्म।

जब कि वास्तविकता इससे बहुत इतर है। महिला शिक्षिकाओं को घर और जॉब में तालमेल बिठाने के लिए कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। महिला शिक्षिका से घर और परिवार की देखभाल की अपेक्षा की जाती है। इससे उनपर अत्यधिक बोझ पड़ता है और वे घर एवं जॉब में सन्तुलन स्थापित करने में बहुत सारी समस्याओं का सामना करती हैं। कार्यस्थल पर भी भेदभव व पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ता है। जिससे उनका परिवार में आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है।

कुछ मामलों में महिला शिक्षिकाओं को वित्तीय कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है, खासकर वे जब एकल माता पिता हों या उनके परिवार का समर्थन करने के लिए सीमित संसाधन हों। इन कठिनाइयों से निपटने के लिए महिला शिक्षकों को परिवार, दोस्त और सहकर्मियों से समर्थन प्राप्त करना चाहिए। ताकि वे घर व जॉब के बीच संतुलन बना सकें। सरकार को भी महिला शिक्षकों के लिए नीतियों व कार्यक्रमों का समर्थन करना चाहिए। जिससे वे अपने कैरियर में सफल हो सकें। प्रभावी समय प्रबन्धन व तकनीकी का प्रयोग महिला शिक्षक अपने कार्य को बेहतर ढ़ंग से व्यवस्थित कर सकती हैं।

श्रीमती ज्योति वर्मा
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय कुचेसर
भवन बहादुर नगर– बुलन्दशहर।

# रविन्द्र नाथ टैगोर

शिक्षण संवाद

रविन्द्र नाथ टैगोर एक महान कवि, लेखक, दार्शनिक और शिक्षाविद् थे। उनका जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता में हुआ था। रविन्द्र नाथ टैगोर को साहित्य में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और वह भारतीय साहित्य के सबसे महान कवियों में से एक माने जाते है।

टैगोर के विचार–
रविन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचार बहुत ही प्रगतिशील और बाल–केंद्रित थे। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन करना नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया है जिसमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक पहलू शामिल हैं।

शिक्षा के उद्देश्य –
पूर्ण विकास –
टैगोर के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का पूर्ण विकास करना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का सामंजस्यपूर्ण विकास शामिल है।
आत्म–विकास:– शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र रूप से सोचने में सक्षम बनाना है।

शिक्षा की विधि–
प्राकृतिक और अनुभवात्मक शिक्षा:– टैगोर का मानना था कि शिक्षा को पुस्तक–आधारित न बनाकर अनुभव और प्रकृति से जोड़ना चाहिए।

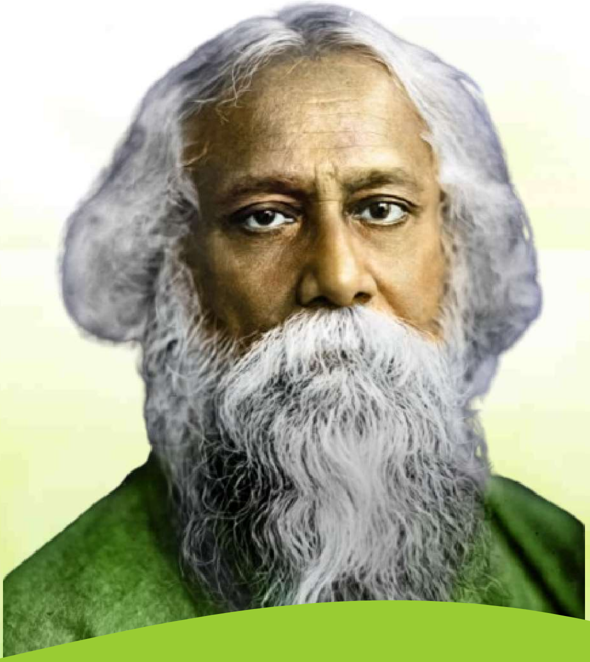

स्वतंत्रता और आत्म–अन्वेषणः–
शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र रूप से सोचने में सक्षम बनाए।

क्रिया–सिद्धांतः –
टैगोर ने शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की सक्रियताओं को शिक्षा का आवश्यक भाग माना।

वाद–विवाद और प्रश्नोत्तरः –
टैगोर की शिक्षण विधि में संवाद और बातचीत को विशेष स्थान प्राप्त है।

शिक्षक की भूमिकाः–
मार्गदर्शक और मित्रः–
टैगोर शिक्षक को एक मार्गदर्शक, मित्र और प्रेरणास्रोत मानते थे, जो छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने और सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रेम और सहानुभूतिः– शिक्षक को छात्रों के प्रति प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए, जिससे वे निडर होकर सीख सकें और आत्मविश्वास विकसित कर सकें।

पाठ्यक्रम– विविध विषयः– टैगोर ने पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के अनेक विषयों को शामिल करने का सुझाव दिया, जैसे कि इतिहास, प्रकृति अध्ययन, भूगोल, साहित्य आदि।

क्रियात्मक गतिविधियाँः– उन्होंने नाटक, भ्रमण, बागवानी, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, मौलिक रचना आदि क्रियात्मक गतिविधियों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करने का महत्व बताया।

इन विचारों के माध्यम से, टैगोर ने शिक्षा को एक नए दृष्टिकोण से देखने का तरीका प्रस्तुत किया, जो बाल–केंद्रित, प्राकृतिक और अनुभवात्मक है। इस तरह रविन्द्र नाथ टैगोर के विचार और कार्य आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं और उनकी कविताएं विश्वभर में पढ़ी और सराही जाती हैं।

अंजू लता पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा
वि.ख.– मझवा, जनपद – मिर्जापुर

# महाराणा प्रताप

शिक्षण संवाद

भारत के महान सपूत महाराणा प्रताप का नाम भारतीय इतिहास में वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ़ प्रण के लिये अमर है। महाराणा प्रताप एक महान राजपूत योद्धा और मेवाड़ के राजा थे। उनका जन्म 9 मई, 1540 ई.को कुंभलगढ़ में हुआ था। उनके पिता उदय सिंह द्वितीय मेवाड़ के राजा थे। महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण घटनाओं का सामना किया और अपनी वीरता और साहस के लिए प्रसिद्ध हुए।

## महाराणा प्रताप के जीवन के प्रेरक प्रसंगः–

### प्रसंग–1 ''हल्दीघाटी का युद्ध''

महाराणा प्रताप ने मुगल बादशाह अकबर के खिलाफ हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी वीरता और साहस का प्रदर्शन किया। इस युद्ध में उन्होंने अपने घोड़े चेतक के साथ अद्भुत वीरता दिखाई और अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

### प्रसंग–2 ''जंगलों में जीवन''

जब महाराणा प्रताप के पास राजकीय संसाधन नहीं थे, तब उन्होंने जंगलों में रहकर अपने जीवन को संघर्षपूर्ण बनाया। उन्होंने अपने परिवार के साथ जंगलों में रहकर कठिनाइयों का सामना किया और अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ते रहे।

प्रसंग—3: ''आत्मसम्मान और गर्व''

महाराणा प्रताप ने कभी भी अपने आत्मसम्मान और गर्व को नहीं खोया। उन्होंने अपने राज्य और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी और अपने जीवन को इसके लिए समर्पित कर दिया।

प्रसंग—4: ''नेतृत्व और वफादारी''

महाराणा प्रताप ने अपने अनुयायियों और सैनिकों के प्रति वफादारी और नेतृत्व की भावना दिखाई। उन्होंने अपने लोगों के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी और उनकी रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

इन प्रसंगों से हमें महाराणा प्रताप के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं की झलक मिलती है, जो हमें प्रेरित करते हैं और हमें अपने जीवन में संघर्षों का सामना करने की प्रेरणा देते हैं।

सीख— महाराणा प्रताप के जीवन से हमें कई महत्वपूर्ण सीख मिलती हैं:—

- साहस और वीरता: महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में साहस और वीरता का प्रदर्शन किया।
- आत्मसम्मान और गवर्रू महाराणा प्रताप ने अपने आत्मसम्मान और गर्व को कभी नहीं खोया।
- नेतृत्व और वफादारीरू महाराणा प्रताप ने अपने अनुयायियों और सैनिकों के प्रति वफादारी और नेतृत्व की भावना दिखाई।
- संघर्ष और धैर्य: महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में कई संघर्षों का सामना किया और धैर्य के साथ उनका सामना किया।

रविन्द्र कुमार पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि.ख.औराई, जनपद – भदोही

# योगा करो

सुबह शाम मिलकर योगा करो तुम
सुबह शाम मिलकर योगा करो तुम
सेहत तुम्हारा सुधर जाएगा
बी पी, शुगर ये बीमारी नहीं है
लाइफ स्टाइल कारण सही है।।
भस्त्रिका, कपालभाति करो तुम
शुगर तुम्हारा सुधर जाएगा ।।
अगर कर सको तो करो प्राणायाम
जीवन तुम्हारा निखर जाएगा।।
अगर हो सके तो जलनेति करो तुम
आँखें तुम्हारी चमक जाएंगी।।
समय से सोना समय से है जगना
बीमारियों से तभी होगा बचना।।
भारत को विश्व गुरु बनाना हमे है
योगा सबसे कराना हमें है।।

कमलेश कुमार
उच्च प्राथमिक विद्यालय शाहपुर
ब्लॉक फतेहपुर, जनपद बाराबंकी

# तितली

रंग–बिरंगी प्यारी तितली,
फूलों पर मंडराती निकली।
इधर–उधर वो उड़ती जाए,
खुशबू संग मुस्कान लुटाए।।

पंखों में इंद्रधनुष अनोखा,
हर रंग है उसका अनदेखा।
कभी गुलाब, कभी चमेली,
फूलों की वह बनी सहेली।

लगती वो खुशियों की रानी,
प्रकृति की है एक निशानी।
बिन बोले ही सब कह देती,
रंगों से सबका मन हर लेती।।

तितली से हम सीखें जीना,
हर मुश्किल में मुस्कुराना।
छोटा जीवन, बड़ा संदेश,
खुश रहो, दुःख न रहे शेष।।

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर–1
वि० क्षे० व जनपद– बागपत

# पर्यावरण एवं जल-संरक्षण

चारों तरफ हरी–भरी मखमली घास, सुंदर–सुंदर आकर्षक पेड़–पौधे, महकते फूल, ठण्डी छाया, शीतल एवं स्वच्छ हवा, साफ–सुथरा जल, परिवेश में महकती फूलों की खुशबू, ऐसा प्राकृतिक मनोरम दृश्य किसे नहीं भाता होगा? निस्सन्देह सभी को।

सच पूछिए तो मैं अपने मन में ऐसे ही प्राकृतिक दृश्य का सपना संजोकर अपने नये विद्यालय– प्राथमिक विद्यालय गुलाबपुर में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण करने जाते समय, रास्ते में सोच रही थी कि ''गुलाबपुर'' नाम वाले इस विद्यालय में बहुत सारे गुलाब ज़रूर होंगे, जिसकी वजह से इसका नाम ''गुलाबपुर'' पड़ा। परंतु यह क्या? जैसा सोचा था उसका अंशमात्र भी मुझे नहीं मिला। ऊबड़–खाबड़, पथरीली–कंकरीली, बंजर जमीन, वृक्षविहीन परिवेश, छोटी सी चहारदीवारी के बाहर छोटे–छोटे तालाब जैसे गड्ढों में जल–भराव, गोबर कण्डे के ढेर, कूड़े के ढेर व गड्ढों में मल–मूत्र त्याग करते बच्चे। अरे! यह मैं, कहाँ आ गयी, मैं यहाँ कैसे रहूँगी? ये सारे प्रश्न मेरे दिमाग में रह–रहकर घूमने लगे। मजबूरी में न चाहते हुए भी मैंने विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया। विद्यालय जाते समय मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था। मेरे विद्यालय के पास एक बम्बा (सिंचाई के लिए छोटी नहर) है। सुबह जब विद्यालय जाते तो लोटा लेकर शौचक्रिया को जाते न केवल पुरुषों की, बल्कि महिलाओं की भी लाइन दिखती। कुछ लड़के तो बिना लोटा लिए ही बम्बा के पानी को गन्दा करते दिख जाते थे। मैं सोचती, ऐसा

क्यों, क्या ये लोग घर में शौचालय नहीं बनवा सकते? परिवेश व पानी को क्यों गंदा करते हैं? कभी कोई नाले के पास बैठा मिलता तो कोई पोखर के पास। निकलने में भी शर्म महसूस होती थी और सोचती थी कि ये खुले में शौचक्रिया कैसे कर सकते हैं? ये सब देखकर विद्यालय में मेरा बिलकुल भी मन नहीं लगता था।

एक दिन मैंने ग्रामप्रधान, ग्रामपंचायत डीलर व बच्चों के अभिभावकों को बुलाकर एक बैठक की। बैठक में हमने सारी बातें रखीं और इन सब समस्याओं का कोई हल निकालने के लिए कहा। ग्रामवासियों का कहना था कि यह तो हम लोगों का रोज का काम है, ये कैसे बंद हो सकता है? मैंने थोड़ी सख़्ती दिखायी, कहा कि अगर आप ऐसा ही करेंगे तो हम कैसे पढ़ायेंगे? मैंने सभी लोगों को समझाया कि आप अपने घरों में शौचालय बनवायें और उसका प्रयोग करें। काफी लोगों को मेरी बात हजम नहीं हुई, लेकिन जब हमने ज़िद पकड़ ली कि आपको इसमें सुधार करना ही होगा। तब हमारी बातों को समझते हुए कुछ ग्रामवासी व पंचायत डीलर स्वयं अपने हाथों में फावड़ा लेकर गन्दगी के ढेर को हटाने लगे। बच्चों के मल–मूत्र को स्वयं ही उठाकर साफ करने लगे। साथ ही मैंने यह हिदायत दी कि स्कूल के आसपास यह सब गंदगी न करें।

उस समय शासन–प्रशासन द्वारा ओ० डी० एफ० (Open Defecation Free) का कार्यक्रम चलाया जा रहा था। हमने सभी ग्रामवासियों और बच्चों को इसके बारे में जानकारी दी। गाँव में स्वच्छता रैलियाँ निकालीं, विद्यालय स्तर पर कई कार्यक्रम किये। नुक्कड़ सभाएं व मोहल्ला बैठकें कीं और लोगों को बाहर शौच न करने के लिए प्रेरित किया। हमारे विद्यालय के बच्चों ने जनपद स्तरीय कार्यक्रम में भी प्रतिभाग किया और मेरे द्वारा स्वरचित गीत को सुनाया। हमने उस कार्यक्रम में बच्चों के साथ कुछ सम्मानित ग्रामवासियों के साथ इस–हेतु किये जा रहे प्रयासों को बताया। हमारे बच्चों के प्रदर्शन से खुश होकर आदरणीय जिलाधिकारी महोदय द्वारा ओ० डी० एफ० कार्य में उत्कृष्ट योगदान हेतु हमारे छात्रों को शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

कुछ समय बाद हमने तत्कालीन सांसद जी के अनुमोदन पर एन० टी० पी० सी० द्वारा वृहद् चहारदीवारी का निर्माण कराया। ऊबड़–खाबड़ पथरीली–कंकरीली व बंजर जमीन में अथक प्रयास करके पौधे लगाये। यदि सौ पौधे लगाते तो उनमें बीस चलते अस्सी सूख जाते। हम फिर सौ पौधे लगाते, बीस चलते फिर अस्सी सूख जाते। यह क्रम चलता रहा, पर हमने हार नहीं मानी। निरंतर इस क्रम के चलने व सभी के अथक परिश्रम के बाद हमारे विद्यालय में चारों तरफ हरे–भरे पेड़ पौधे, हरी–भरी घास, रंग–बिरंगे फूल विद्यालय की शोभा को बढ़ाने

लगे। आज हमारे विद्यालय में हमारे द्वारा लगाये गये सौ से ज्यादा पौधे वटवृक्ष का रूप ले चुके हैं। बड़े पेड़ों के अलावा पुष्पित व पल्लवित होते रंग–बिरंगे गुलाब, गेंदा, चमेली, बेला, हरशृंगार, मधुमालती, सावनी, कनेर, गुड़हल, बोगनविलिया, केली, गुलमोहर, मनोकामिनी, केरेन्डुला, सदाबहार, मोरपंखी, जैसे कई पौधे आगंतुकों का मन मोहने लगे हैं। सच में, आज हमारा विद्यालय ''गुलाबपुर'' इस नाम को चरितार्थ करता नज़र आता है।

इसके साथ ही ग्रामवासियों ने भी अपने घर में शौचालय बनवाये व उनका प्रयोग करने लगे। विद्यालय के आसपास भी सफ़ाई रखने को सभी लोग अपना नैतिक कर्तव्य समझने लगे। कुछ ग्रामवासी भाई तो विद्यालय की छुट्टी के उपरान्त विद्यालय की सुरक्षा भी करने लगे। ऐसे भाइयों को मैं विभिन्न ख़ास अवसरों पर सम्मानित भी करती हूँ। अंत में, मैं कहना चाहती हूँ कि पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से किया गया कार्य सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है।

रश्मि (प्रधानाध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय गुलाबपुर
विकासक्षेत्र– भाग्यनगर
जनपद– औरैया

# हाइब्रिड लर्निंग

हाइब्रिड लर्निंग का अर्थ व्यक्तिगत और ऑनलाइन गतिविधियों को मिलाकर शिक्षा देना है। इसमें छात्र कुछ गतिविधियों में व्यक्तिगत रूप से भाग लेते हैं जैसे कि व्याख्यान पर चर्चा, जबकि अन्य गतिविधियों को ऑनलाइन पूरा करते हैं ,जैसे कि वीडियो या ऑनलाइन क्विज।

**उद्देश्यः-** हाइब्रिड लर्निंग का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक शिक्षण की ताकत, जैसे की व्यक्तिगत बातचीत और मार्गदर्शन को ऑनलाइन लर्निंग की फ्लैक्सिबिलिटी और आसानी से सामग्री तक पहुंचने के लाभों के साथ जोड़ना है।

**लाभः-** इस लर्निंग के द्वारा अध्यापक और छात्रों में सक्रिय इंटरेक्शन रहता है और बच्चे ऑनलाइन क्विज करने में रुचि लेते हैं, जिससे वे किसी भी विषय से संबंधित कोई भी लर्निंग आउटकम को आसानी से सीख पाते हैं ।

**सामग्रीः-** भिन्नों का चार्ट, श्यामपट्ट, चाक, परिवेशीय वस्तुएं, गूगल फॉर्म के द्वारा निर्मित क्विज।

**क्रियाविधिः-** इस विधि में अध्यापक पहले भिन्नों की सांक्रियाओं को चार्ट और श्यामपट्ट के माध्यम से स्पष्ट करेगा। वह विद्यालय के रसोईघर में उपलब्ध सब्जियां जैसे आलू, टमाटर आदि के अलग– अलग आकार के भाग करके एवं कक्षा में उपलब्ध कुछ वस्तुएं, mathkit आदि का प्रयोग करके भिन्न को प्रदर्शित करना सिखाएंगे। उसके बाद उनको वीडियो के माध्यम से भिन्नों की अवधारणा को स्पष्ट कराएंगे– जैसे छोटा – बड़ा, जोड़ – घटाव आदि और नोटबुक में नोट कराएंगे। इसके बाद एक ऑनलाइन क्विज का निर्माण करके बच्चों के बनाए गए व्हाट्सएप ग्रुप पर भेजेंगे तथा बच्चों को हल करने के लिए प्रेरित करेंगे।

**विशेषः-** कुछ बच्चे जिनके अभिभावक जागरूक हैं, उनसे संपर्क करके बच्चों को क्विज हल करने के लिए प्रेरित किया जाए तथा जिन बच्चों के अभिभावकों के पास एंड्रॉयड फोन नहीं है उनके लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न का निर्माण कर सकते हैं। बच्चे इस लर्निंग में बहुत सक्रिय रहते हैं और दिए गए टास्क को समय से पूरा कर पाते हैं। मेरे विद्यालय में 7 अध्यापक है कुछ बच्चों को में उन सबके फोन के द्वारा भी ऑनलाइन क्विज को हल करा देती हूँ। जिससे वो बच्चे जिनके पास फोन नहीं है, वो भी ऑनलाइन क्विज को हल करना सीख पाते हैं।

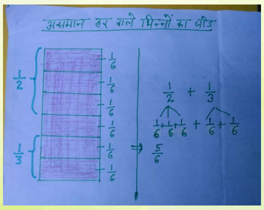

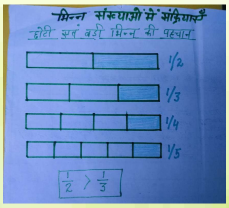

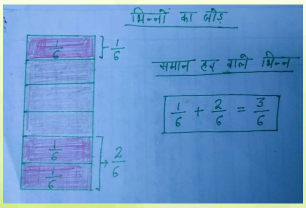

नीलम रानी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० निबाली कंपोजिट
विकास क्षेत्र व जनपद– बागपत

# गोले में चर्चा



1. शिक्षक बच्चों के साथ एक गोले में खड़े होकर किसी विषय पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
2. बच्चों को अपने विचार और राय व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. चर्चा के दौरान, बच्चों को एक–दूसरे के विचारों को सुनने और सम्मान करने के लिए सिखाएँ।
4. प्रोत्साहन के लिए बच्चों का उत्साहवर्धन ज़रूर करें।

शमा परवीन
अनुदेशक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकोरा,
विकास खण्ड–तजवापुर,
जनपद–बहराइच।

# पेपर मेसी

## नवाचार का नाम–पेपर मेसी

क्रियान्वित करने की प्रक्रियाः–

रद्दी कागज को गीला कर लुगदी बनाने के पश्चात् गोंद, चारकोल इच्छानुसार मिलकर मनपसंद आकार में आकृति तैयार कर सकते है। खिलौने, मूर्तियां डलिया आदि शैक्षिक सामग्री का निर्माण के साथ ही रोजगार भी किया जा सकता हैं।

इससे होने वाले लाभ– स्वयं करके सीखना, खिलौने, मूर्तियां,शैक्षिक **TLM** निर्माण, पपेट, कठपुतली निर्माण, आर्थिक सहायता, आर्थिक मजबूती, रोज़गार परक, शिक्षण में सहयोग आदि। व्यवसायिक शिक्षा से जुड़कर आर्थिक रूप से स्वयं का व्यवसाय करते हुए बच्चे अपने परिवार का सहयोग ले सकते हैं। इससे उन्हें आगे की पढ़ाई पूरी करने में भी मदद मिल सकती हैं। बच्चों को और भी गतिविधियों के बारे में समय समय पर सदैव प्रेरित करने का प्रयास जारी है। जैसे– पेड़ तैयार करना, जैविक खाद बनाना, बागवानी, सिलाई कढ़ाई, मेंहदी, पैरदान, क्रोशिया आदि भी बच्चों को सिखाया है जो कि सफल रहा।

मीरा रविकुल, प्र०अ०
प्राथमिक विद्यालय कतरावल–1
ब्लॉक – बड़ोखर खुर्द जनपद– बांदा

# बिन पानी खत्म कहानी

शिक्षण संवाद

स्कूल से वापस घर लौटते समय सड़क किनारे दीवार पर लगे पोस्टर को देख राजू अचानक रुक गया। राजू को रुका देख सीमा और विजय भी राजू के पास आ गए। राजू दीवार पर लगे उस पोस्टर को बड़े ही गौर से देख रहा था जिसमें एक बुजुर्ग महिला गड्ढे में भरे गंदे पानी को निकाल कर पी रही थी। सीमा बोली राजू इस पोस्टर में क्या खास बात है जो इतनी गौर से देख रहे हो। इतना कहकर सीमा और विजय भी उस पोस्टर को देखने लगे। तभी राजू बोला सीमा ये बुजुर्ग महिला गड्ढे का गंदा पानी क्यों पी रही है ? राजू की बात सुनकर सीमा बोली राजू क्या तुम नहीं जानते हमारे देश में ऐसे बहुत से स्थान है जहां आज भी पीने के पानी की किल्लत है। ये तो भगवान का शुक्र है कि अभी हम लोगों के यहां ऐसी किल्लत नहीं है। वरना देश में ऐसे–ऐसे इलाके हैं जहां लोग पानी की एक–एक बूंद को तरसते हैं। पानी के लिए लोगों को कोसों दूर पैदल जाना पड़ता है। सीमा की बातें सुनकर विजय बोल उठा क्या सच में हमारे देश में पानी की इतनी कमी है कि लोगों को गंदा पानी पीने के लिए मजबूर होना पड़ता है। तब सीमा ने दोनों को बताया कि वैसे तो पृथ्वी पर पानी बहुत अधिक मात्रा में है लेकिन उसमें से पीने योग्य पानी बहुत ही कम मात्रा में है। पृथ्वी पर मौजूद कुल पानी का मात्र तीन प्रतिशत ही पीने योग्य है बाकी शेष पानी खारा है,जिसे पीने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इसके बावजूद भी लोग पानी की अहमियत नहीं समझते और आए दिन तरह–तरह से पानी का दुरुपयोग करते हैं। सीमा की बातें सुनकर राजू बोला, सीमा क्या तुम बता सकती हो कि लोग कैसे पानी बर्बाद करते हैं ? इतने में विजय भी बोल उठा, हां सीमा मुझे भी बताओ। उन दोनों की उत्सुकता देख सीमा बोली हां क्यों नहीं, मैं जरूर बताऊंगी। देखो हम सभी लोग अपने दैनिक

जीवन में जाने–अनजाने बहुत अधिक मात्रा में पानी का दुरुपयोग करते हैं लेकिन कुछ बातों पर अमल करके हम पानी की बर्बादी को रोक सकते हैं। इतने में राजू बोला वो कैसे ? तब सीमा बोली, जैसे नहाने के लिए हमेशा बाल्टी और मग का उपयोग करें। शावर या बाथटब का उपयोग कभी नहीं करें, क्योंकि ऐसा करने से बहुत अधिक मात्रा में पानी बर्बाद होता है। ब्रश करते समय या दाढ़ी बनाते समय नल को खुला न छोड़ें। घर की फर्श व मोटर गाड़ियों को धोने के लिए साफ पानी का इस्तेमाल करने के बजाए आर.ओ. या वाशिंग मशीन से निकले हुए पानी का इस्तेमाल करें। कपड़े धोने के लिए हमेशा वाशिंग मशीन का प्रयोग न करें। जब अधिक कपड़े धुलने हों तभी वाशिंग मशीन का प्रयोग करें थोड़े कपड़े हाथ से ही धुल लें, इससे काफी मात्रा में पानी की बचत होगी। शौचालयों में दो तरह के फ्लैश का प्रयोग करें। जैसे मूत्र त्याग के बाद कम पानी वाले और मल त्याग के बाद अधिक पानी वाले फ्लैश का उपयोग करें। कूलर और ए.सी. से निकलने वाले पानी का इस्तेमाल फूल–पौधों की सिंचाई के लिए करें। बर्तन धुलने के लिए सीधे नल का उपयोग कभी न करें बल्कि बाल्टी या टब में पानी भरकर ही बर्तन धुलें। फल, अनाज या सब्जियों को सीधे नल से धोने के बजाय बाल्टी या टब में पानी भरकर ही धुलें। बरसात के दिनों में छत पर जमा होने वाले पानी को पाइप लाइन के माध्यम से वाटर टैंक या जमीन में संरक्षित करें। सीमा की बातें सुन राजू और विजय की आंखें खुली की खुली रह गईं। दोनों एक स्वर में बोले सीमा आज तुमने हमारी आंखें खोल दी। जाने–अनजाने हम भी पानी का दुरुपयोग करते थे। लेकिन आज हम कसम खाते हैं कि न तो कभी पानी का दुरुपयोग करेंगे और न ही किसी को करने देंगे, क्योंकि आज हम जान गए हैं ''बिन पानी खत्म कहानी।''


सुनील कुमार, प्रभारी प्रधानाध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय अड़गोड़वा (1–8)
विकास क्षेत्र– मिहींपुरवा जनपद– बहराइच
मोबाइल नंबर 6388172360
ईमेल kumarsunil81f@gmail-com

# शिक्षा में खेलों की महत्व

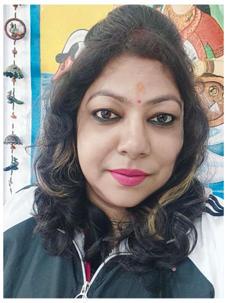

शिक्षण संवाद

बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ खेलों के भी महत्व से अवगत होना अत्यंत आवश्यक है। जहाँ एक ओर सर्वांगीण विकास की बात की जाती है, जिसमें विद्यार्थी के शारीरिक विकास और मानसिक विकास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो बिना शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के संभव नहीं है। खेलों में निरंतर प्रतिभाग से विद्यार्थियों का शारीरिक विकास तो होता ही है। साथ ही साथ उनका मानसिक विकास भी होता है और वे मानसिक रूप से अधिक मज़बूत बन पाते हैं। खेलों में निरंतर प्रतिभाग से विद्यार्थियों में न्यूरोमस्कुलर कोऑर्डिनेशन मज़बूत होता है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को किसी न किसी आउटडोर गेम में अवश्य प्रतिभाग कराया जाना चाहिए। खेल भी दो प्रकार के होते हैं इनडोर और आउटडोर इनमें से कुछ इनडोर गेम में प्रतिभाग से बच्चों में मानसिक विकास होता है। जैसे शतरंज, कैरम इत्यादि। वहीं आउटडोर खेलों में प्रतिभाग से शारीरिक और मानसिक दोनों विकास साथ में होते हैं।

आप सभी के साथ एक आउटडोर रीक्रिएशन गेम साझा करते हैं रीक्रिएशन गेम को मनोरंजनात्मक खेल भी कहा जाता है।

डॉज बॉल – इसके लिए खिलाड़ियों को दो टीमों में बांट देते हैं। एक टीम मैदान में गोला बनाकर खड़ी हो जाती है एवं दूसरी टीम के खिलाड़ी अलग दूसरी जगह पर खड़े रहते हैं एवं बारी–बारी से दो दो अथवा तीन तीन खिलाड़ी उस गोले के अंदर खेलने के लिए आते हैं। पहली टीम के खिलाड़ियों को वॉलीबॉल जैसी हल्की बॉल दी जाती है। जिससे किसी को किसी प्रकार की चोट ना लगे। पहली टीम को निर्देश दिया जाता है कि यह बाल उन्हें दूसरी टीम के खिलाड़ियों के कमर के नीचे मारना है। जिस खिलाड़ी के पैरों पर बाल लग गई। वह खिलाड़ी आउट होकर गोले से बाहर चला जाएगा। इस प्रकार पहले राउंड के खिलाड़ी आउट होने पर अगले राउंड के खिलाड़ी गोले में प्रवेश करते हैं। जब तक एक टीम के सभी खिलाड़ी आउट न हो जाऐं, खेल चलता रहता है। जब सभी खिलाड़ी आउट हो जाते हैं। तब पहली टीम का समय नोट कर लिया जाता है कि उन्होंने कितने समय में सभी खिलाड़ी आउट किये। अब दूसरी टीम की बारी आती है। यही प्रक्रिया दूसरी टीम के साथ दोहराई जाएगी। इस खेल में कुछ बातें ध्यान अवश्य रखें।

1. एक आयु वर्ग के खिलाड़ियों को इसमें खिलाएं। छोटे और बड़े बच्चों को एक साथ न खिलाएं। 2. गोले का आकार आवश्यकता अनुसार बड़ा रखें जिससे कि कोई भी गेंद को तेज़ ना मार सके। 3. खेल अध्यापक अपनी निगरानी में करवायें। जो भी विद्यार्थी नियमानुसार न खेले, तो तुरंत उसे चेतावनी दें। जिससे कि किसी को भी, किसी प्रकार की हानि न हो।

प्रीति शर्मा (बीपीएड)
प्रधानाध्यापिका
(ब्लॉक व्यायाम शिक्षिका)
प्राथमिक विद्यालय गुलड़िया मो. हुसैन,
विकास क्षेत्र दमखोदा, जनपद बरेल

# आई एम कलाम

**''शिक्षा और आत्मनिर्भरता के महत्व को बताती एक फिल्म''**



'मैं कलाम बनूंगा, बड़ा आदमी बनूंगा।'
'असली बादशाह वही होता है जो दूसरों के चेहरे पर मुस्कान ला सके।'
'मेहनत करने वाला कभी हार नहीं मानता।'
'किसी की वर्दी या कपड़े से नहीं, उसके हौसले से पहचान होती है।'
(ये संवाद आई एम कलाम फिल्म से है ।)

'आई एम कलाम' (2010) राजस्थान की पृष्ठभूमि में बनी एक छोटे बच्चे छोटू की एक फिल्म नहीं, बल्कि एक सपना है, हर बच्चे का जो सीमित संसाधनों में भी असीम संभावनाएँ रखता है। यह फिल्म शिक्षकों, माता–पिता और समाज को याद दिलाती है कि बच्चों को शिक्षा और सम्मान देना ज़रूरी है।

फिल्म की संक्षिप्त कहानी –

फ़िल्म एक गरीब बच्चे छोटू की कहानी है, जो राजस्थान के एक ढाबे में काम करता है। वह जिंदादिल, बुद्धिमान और सीखने के लिए उत्सुक है। एक दिन वह भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के बारे में जानता है और उनसे इतना प्रभावित होता है कि खुद को 'कलाम' कहने लगता है।

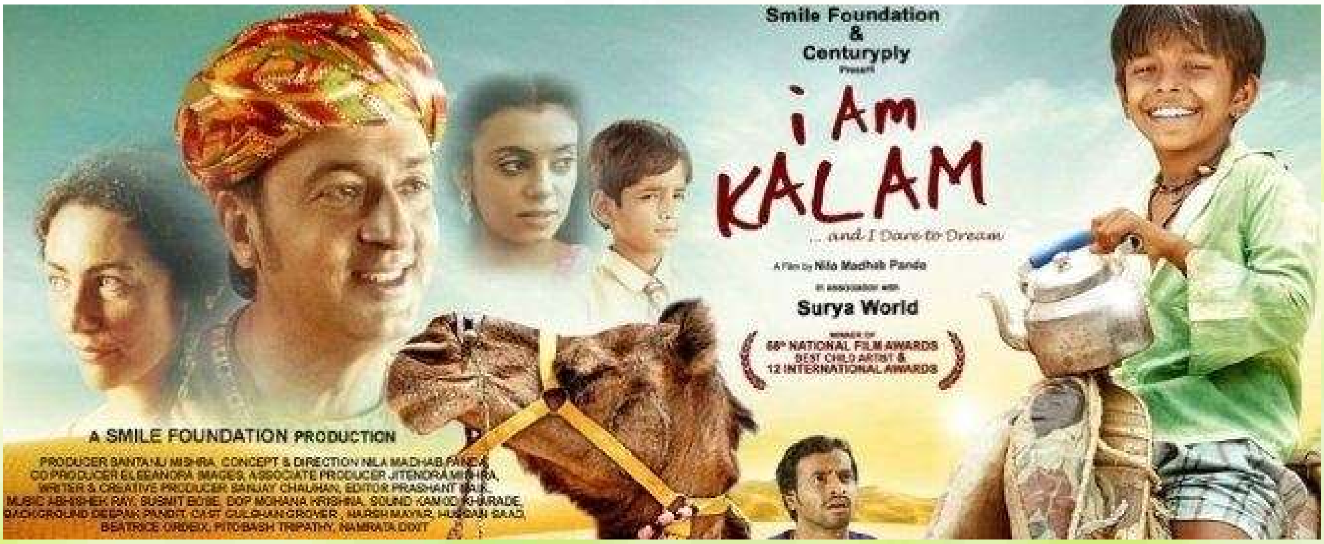

छोटू का सपना है कि वह स्कूल जाकर पढ़े, कुछ बड़ा बने और अपनी जिंदगी बदल सके। वह एक अमीर राजकुमार रणविजय का दोस्त बनता है, जिससे दोनों की सोच और परिस्थितियों में गहरा अंतर सामने आता है। लेकिन यही दोस्ती दोनों को इंसानियत और समानता का पाठ भी सिखाती है।

फिल्म से प्राप्त संदेश–

- शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है।
- गरीबी सपनों की उड़ान नहीं रोक सकती।
- आत्मसम्मान और आत्मविश्वास से हर बाधा पार की जा सकती है।
- बच्चों को सपने देखने दें और उन सपनों को गंभीरता से लें ।

प्रेरणा कहीं से भी मिल सकती है – जैसे कि पूर्व राष्ट्रपति मिसाइलमैन डॉ. कलाम से ।


अजय द्विवेदी
प्रा वि पांडेयबस्ती (भटेवरा )
छानबे , मीरजापुर (उ. प्र.)


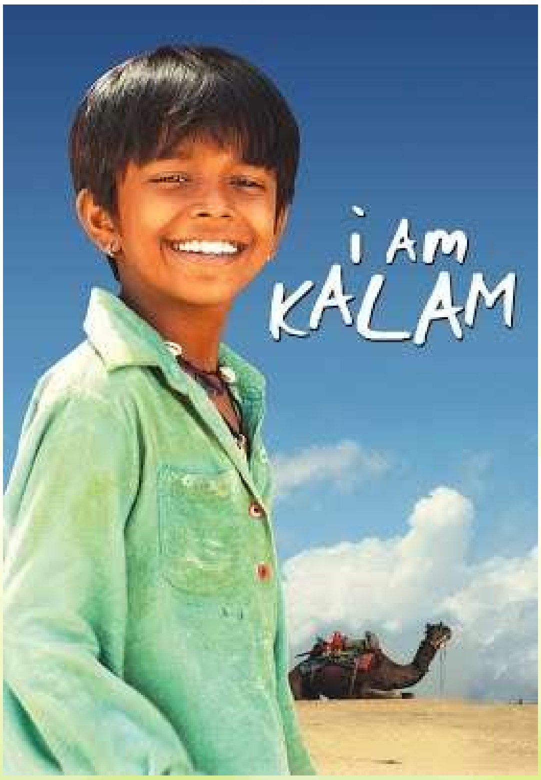

# मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप्प नम्बर–**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : **9458278429**
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात